Post SSR Report

Department of Hindi

Name of Program: दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार

Date & Time: दिनांक : 23-24 फरवरी 2023

समय: प्रातः 10 बजे से 06: 30 बजे तक

Organized by (Society/Department): हिंदी परिषद् (हिंदी विभाग),इतिहास विभाग,गाँधी स्टडी सर्किल एवं आई.क्यु.ए.सी. के संयुक्त तत्त्वावधान में

Speaker Name with contact Details:

प्रोफेसर दिनेश सिंह , पूर्व कुलपति दिल्ली विश्वविद्यालय एवं वर्त्तमान कुलाधिपति कुमार मंगलम विश्वविद्यालय

प्रोफेसर अनन्या वाजपेयी ,सेंटर फॉर डेवलपमेंट स्टडीज,दिल्ली प्रोफेसर आदित्य मुखर्जी, इंस्टिट्यूट ऑफ़ एडवांस स्टडीज, जे.एन.यू. प्रोफेसर इनायत अली ज़ैदी , इतिहास विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया प्रोफेसर युजिनिया वेनिना , इंस्टिट्यूट ऑफ़ ओरिएण्टल स्टडीज, मास्को, रिशया प्रोफेसर चंदन कुमार ,हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय प्रोफेसर अनिल कुमार राय, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय प्रोफेसर(पूर्व) नंदिकशोर पाण्डेय ,हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय प्रोफेसर(पूर्व) सुनीता जैदी, इतिहास विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया प्रोफेसर(पूर्व) आनंद प्रकाश ,मनोविज्ञान विभाग , दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रोफेसर रविकांत , सेंटर फॉर डेवलपमेंट स्टडीज,दिल्ली

Summary (Maximum 200 words):

भारतबोध: इतिहास राजनीति और साहित्य विषय पर आत्मा राम सनातन धर्म कॉलेज की आई क्यू ए सी सेल,इतिहास एवं हिंदी विभाग तथा गांधी एवं आंबेडकर स्टडी सर्किल के संयुक्त तत्त्वावधान में, भारतबोध: इतिहास,राजनीति और दर्शन विषय पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन संपन्न हुआ।इसके उदघाटन सत्र में दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपित पद्मश्री प्रोफेसर दिनेश सिंह ने वैदिक रचनाओं और औपनिषदिक ग्रंथों के हवाले से भारत के उस बोध की तरफ इशारा किया जिसके कारण कभी विश्व अर्थव्यवस्था में भारत का सबसे बड़ा योगदान हुआ करता था। ज्ञान और हुनर के इस समन्वित बोध का भारत आदिम पुरस्कर्ता रहा है। भारत के इसी बोध को गहराई से समझना है,जिसे नई शिक्षा नीति आगे बढ़ाने की बात करता है। उन्होंने गांधी को याद करते हुए सत्य और अहिंसा को भी भारतबोध के आदर्श पहलू के रूप में देखा और इस बात की तरफ संकेत किया कि हम गांधी से सत्य और अहिंसा में विश्वास करते हुए अपनी अंतर की आवाज़ सुनकर दृढ़ता से अपने कर्मपथ पर चलना सीख सकते हैं।

प्रोफेसर अनन्या बाजपेयी ने महाभारत,रामायण तथा आधुनिक साहित्य के संदर्भ भारत की धारणा से संबंधित बातें रखी और बताया कि भारत की विशाल सांस्कृतिक परम्परा इस बात की गवाही देती है कि भारत की पहचान उदारता, करुणा, सह अस्तित्व और नई रचनात्मक सोच के रूप में रही है।

अली जैदी तथा प्रोफेसर आदित्य मुखर्जी प्रोफेसर चंदन कुमार प्रोफेसर नंदिकशोर पांडेय प्रोफेसर रिवकांत मनोवैज्ञानिक एवं दिल्ली विश्विद्यालय के पूर्व प्रोफेसर आनंद प्रकाश प्रोफेसर सुनीता जैदी तथा महात्मा गांधी हिंदी विश्वविधालय के पूर्व कुलपित प्रोफेसर गिरिश्वर मिश्र ने भारत की आध्यात्मिक चिंतन परंपरा को याद करते हुए भारतीय मनुष्य की उदारतावादी चरित्र एवं भागवत भाव को चिन्हित करते हुए उसकी विविधता पूर्ण पहचान को भारत बोध से जोड़कर देखने पर बल दिया।।

Proofs: (Poster/Photos/List of Participants/Sample Certificate/Feedback):





